दिव्य सूक्त

शक्तिपात ध्यान-शिविर

शक्तिपात ध्यान-शिविर में तुम्हारी कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत होती है।

यदि तुमने कई ध्यान-शिविरों में भाग लिया है

तो तुम्हारा अनुभव अधिकाधिक ठोस होता जाता है।

तुम अधिकाधिक शुद्धिकरण का अनुभव करते हो।

एक और रहस्य का उद्घाटन होता है, एक और अन्तर्दृष्टि प्राप्त होती है।

तुम अनुभव करते हो कि तुम सत्य के ज्ञान में

अधिकाधिक स्थिर होते जा रहे हो।

इससे तुममें, अपनी ही महान आत्मा के प्रति

एक दिव्य आत्मविश्वास जग जाता है, एक दिव्य आस्था जग जाती है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

संस्कृत भाषा में 'दिव्य' का अर्थ होता है दैवी या ईश्वरीय, और 'सूक्त' का अर्थ है, वह कथन सर्वोच्च सत्य को उजागर करता है। दिव्य सूक्त : ईश्वर के विषय में सिखावनियाँ।

© २०१४ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउण्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।